ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII Issue - II
April - June - 2019

Hindi Part - II & III

Peer Reviewed Refereed and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING

2018 - 5.5

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

VOLUME - VIII, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI PART - III

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	जन संचार का माध्यम हिन्दी सिनेमा और हिन्दी भाषा साहित्य का रिस्ता **प्रा. डॉ. विठ्ठल तुळशीरामजी वजीर**	१-५
२	हिंदी उपन्यास और देश विभाजन (तमस, लौटे हुए मुसाफिर तथा मैं मुहाजिर नहीं हूँ उपन्यास के विशेष संदर्भ में) **करिश्मा अय्युब पठाण**	६-११

VOLUME – VIII, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

१. जन संचार का माध्यम हिन्दी सिनेमा और हिन्दी भाषा साहित्य का रिस्ता

प्रा. डॉ. विठ्ठल तुळशीरामजी वजीर
शोधनिर्देशक तथा सहयोगी अधिव्याख्याता, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, परतूर, ता. परतूर, जि. जालना. (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना

आदियुग से लेकर आज - तक हिन्दी भाषा में अनेक विधाओं में साहित्य सृजन हुआ है। भारत में हिन्दी भाषा सबसे ज्यादा बोली और समजी जाती है। यह भाषा समृध्द भाषा है। कहानी, उपन्यास, काव्य, आत्मकथा, रिपोतार्ज, आज अनेक प्रकार के विधाओं के माध्यम सें साहित्य सृजन हो रहा है। साहित्य समाज का दर्पण होता है और साहित्य के माध्यम से ही उसका प्रतिबिंध साहित्य में देखने को मिलता है। आज का युग विज्ञान - तंत्रज्ञान का युग है। आज हिन्दी भाषा का प्रयोग आंतरराष्ट्रीय धरातल पर पहुँच चुका है। सारी दुनिया में हिन्दी भाषा का स्थान दुसरा है। सुचना और प्रौद्योगिकी के प्रभाव सें हिन्दी भाषा ने सफलता प्राप्त करना सुरु कि है। जनमाध्यमों में हिन्दी भाषा का प्रयोग दिन ब दिन बढता जा रहा है। हिन्दी भाषा साहित्य और सिनेमा का अतुट नाता है।

फिल्म का प्रभाव सभी वर्ग तथा वर्ण के लोगों पर पडता है। फिल्म का अनुकरण बच्चों के साथ - साथ बडे भी करते है। विश्व की पहली कलनिक फिल्म 1965 में प्रदर्शित हुई, जिसका नाम 'ला एरेसिपर' था। दादा साहब फालके जी ने कुल मिलाकर सौ फिल्में बनाई। दादा साहब फालके जी को हिन्दी सिने जगत का पितामह कहाँ जाता है। पचास के दशक में फिल्म पुरस्कार देने की परंपरा शुरु हुई। आवारा, बरसात और 420 फिल्में पचास के दशक में ही बनाई। साथ ही साथ गुरुदत्त ने प्यासा, साहब बीबी और गुलाम और कागज के फुल आदि महत्वपुर्ण फिल्में बनाई। आज का वास्तव यही है अच्छी फिल्मों के साथ - साथ बुरे कथानक वाली फिल्में भी अधिकांश मात्रा में देखने को मिल रही है। 21 वी सदी में भारत सर्वाधिक फिल्म निर्माता देश बन चुका है।

एक समय ऐसा हुआ उस समय में राजकुमार, देवानंद को बेहद पसंद किया जाता था। किसी ने हेमामालिनी, माधुरी दीक्षीत, ऐश्वर्या रॉय, डिंपल कपडिया, चुही चावला, संजय दत्त तो किसी ने रेखा, काजल, मिनाक्षी, श्रीदेवी, करिश्मा, करिना के अदाओं को। आज का जमाना अमिताभ बच्चन के साथ - साथ सलमान खान, अजय देवगण, अमिर खान, शाहरुख खान, विवेक ओबेराय, तुषार कपुर, रितेश देशमुख, नये दौर के अभिनेता / अभिनेत्री जिनमें प्रमुख रुप से रनवीर कपुर, कैटरिना कैफ, सैफ अली खान, दिपीका पदुकोन, सारा खान, आलीया भटट, सोनाक्षी सिन्हा, सनी लिवन, अक्षय कुमार खलनार्योको कि भुमिकाओं में सिने जगत में अमरिश पुरी, प्रेम चोपडा, गुलशन ग्रोवर, सदाशिव अमडापुरकर इन अभिनेताओं ने खलनायको की हिन्दी सिनेमा में अच्छी खासी भूमिकाए निभाई है। और निर्देशक रुप में आज के जमाने में सुभाष घाई, 1993 में साजन फिल्म बनी और उस फिल्म में अलका याज्ञिक जी ने सुपर हिट गीत गायें आज भी ये गीत फिल्म जगत में राज करते है। सोनु निगम,

Professor
College

कुमार सानु, ऐसे अनेक गायक गीतकार फिल्म इंडस्ट्रिमें है। सेन्सार बोर्ड के होने के पहले फिल्मों का औपचारिक ... था। उसका मकसद था की समाज पर फिल्म का कुप्रभाव ना पडे। 1952 में सेन्सार बोर्ड का गठन हुआ। आज ... कथानक पाश्चात्य सभ्यता की सभ्यता को ग्रहन करते हुआ। फिल्मों का आसर आज की युवाओं के साथ - साथ ... रहन - सहन पर पड रहा है। जो भी हो, समय के साथ - साथ फिल्म जगत में बहुत क्रांती हो गई है। आज फिल्मों ... तरह - तरह के गरमा - गर्म मसले फिल्मों के विविधांगी विषय बन चुके है। उस दिशा निर्देशन में जन - संचार के ... हिन्दी भाषा का योगदान उल्लेखनीय है। विश्व के हर कौने में हिन्दी भाषा सिनेमा जगत के माध्यम से जा चुकी है। आज ... सिनेमागृह की संख्या काफी है।

हिन्दी सिनेमा और हिन्दी भाषा साहित्य

शब्द, वाक्य और संवाद सिनेमा भाषा के प्रमुख अंग नही होते है। शब्द, वाक्य और संवाद साहित्य की भाषा के ... होते है। सिनेमा की भाषा साहित्य की भाषा से अलग होती है। सिनेमा की भाषा वह है जिसे निर्देशक कैमेरे की ... अभिव्यक्त करता है। कैमेरे का ऐंगल, गति मुव्हमेंटस अभिनय, रंग, ड्रेस, लोकेशन सिनेमा की भाषा के प्रमुख अंग है। संवाद भी इसका हिस्सा होते है। साहित्य में जो बात पन्ने - पन्ने रंग कर कही जाती है सिनेमा वह बात कुछ दृश्यों के माध्यम से ... में कह जाता है। हिन्दी सिनेमा देश - दुनिया का सशक्त लोकप्रिय जनसंचार का माध्यम है। विश्व के हर - देश राज्य में सिनेमा का बोलबाला रहा है। अनेक भाषाओं में सिनेमाओं का निर्माण हुआ है। सिने जगत का एक लंबा इतिहास है।

"ऐरिक जास्टने के अनुसार सिनेमा वर्तमान के समाज में सवहंन का सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम है। जैसा ... शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय सदभावनाओं की बढोत्तरी का सबल-तम साधन है। यदि यह कहा जाता है कि एक चित्र एक ... चित्रों से ज्यादा गुणवान है।" विश्व की हर संस्कृती, रहन, सहन, समाज में व्याप्त सामाजिक बुराईया, पाखंड, अंधविश्वास, पारिवारिक जीवन, राजनिती, भ्रष्टाचार, दबंगगिरी, अन्याय, अत्याचार, नानाविध विषय को लेकर अपना अस्तित्व ... है। भारतीय समाज परिवार, शहर के घर - घर में सिनेमा जगत की काफी चर्चा चलती रहती है। आज सिनेमा के माध्यम से हिन्दी भाषा घर - घर में पहुँच गई है।

हिन्दी सिनेमा के क्षेत्र में सामाजिक - मुल्यों, मान्यताओं के प्रखर प्रवक्ता के रुप में व्ही. शांताराम, देवकी, बोस, बिमल राय, मास्टर विनायक, महबुब ख्वाजा, अहमद आब्बास आदि निर्देशक सामने आए। भारतीय समाज मे सिनेमा जगत ने एक असिम छाप छोड दि है। आज भी अनेक फिल्म के गीत सुप्रसिध्द इतिहास के पन्नों पर हिट हुए है। लता मंगेशकर द्वारा गाया हुआ हिन्दी फिल्म का गीत ये मेरे वतन के लोगो द्वारा भारतीय नवजवान सैनिकों के कार्यो का परिचय करवा देता है। ऐसे एक नहीं अनेक सिनेमा, फिल्मों के गीतों के माध्यम से पाठशाला, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, विश्वविद्यालयों के जरिए समाज परिवर्तन के लिए हिन्दी सिनेमाओं का सहारा लिया जाता है। आज फिल्म मीडिया एक सशक्त माध्यम बन चुका है। सिनेमा तकनिक का श्रेय - थॉमस अल्वा एडीसन को जाता है। जॉर्ज इस्टमैन ने सैल्युलाईट फिल्म का अविष्कार किया। हिन्दी भाषी क्षेत्र हो या अहिन्दी भाषी हर कौने में हिन्दी सिनेमा पहुँच चुका है। हिन्दी भाषा में समाज के हर वर्ग के हिसाब से देश, काल,

आवरण की हिसाब सें हर किस्म की फिल्में रिलीज हुई है। सिनेमा का अविष्कार 28 दिसम्बर 1885 को ल्युमियर बन्धुओंद्वारा किया गया। फ्रान्स के ल्युमियर ब्रदर्स अर्नेस्ट तथा लुई ज्युनियर ने सिनेमाटोग्राफ नामवाला यंत्र बनाया। जिसे आधुनिक फिल्म जगत का पितामह कहाँ जाता है। सुचना प्रौद्योगिकी क्रांती ने तो सिनेमा जगत में नई तकनीकी का सहारा लिया जा रहा है।

"भारत में सबसे पहली फिल्म 1896 में मुंबई के वाटसन होटल में चित्र रुपी प्रदर्शन हुई। इसके पश्चात 1913 में राजा हरिश्चन्द्र नाम की पूर्णतः भारतीय फिल्म बनी। जिसका निर्माण धुंडीराज गोविंद फालके दादासाहब फालके को श्रेय जाता है। यह फिल्म हिन्दी, आंग्रेजी दोनो भाषा में बनाई गई। लेकिन कहाँ जाता है। कि राजा हरिश्चन्द्र के पहले पुंडलिक फिल्म बन चुकी थी। सुचना की नजर से यह आधी ब्रिटिश फिल्म थी। जो भी हो लेकिन दादासाहब फलके को भारतीय सिनेमा जगत का पितामह कहा जाता है। आर्देशीर इराणी ने जब आलमआरा बनाई तो मुक फिल्मों का स्थान संवाद फिल्मों ने लिया। 14 मार्च सन 1931 को ध्वनि फिल्म आलमआरा का प्रदर्शन मुंबई के मॅजेस्टिक सिनेमा में हुआ।

इस प्रकार मुक फिल्मों का स्थान संवाद फिल्मों ने लेकर दक्षिण - भारत में भक्त प्रल्हाद (तेलगु) और कालीदास (तमिल) संवाद फिल्में बनी। हिन्दी सिनेमा का इतिहास राजा हरिश्चन्द्र और आलमआरा से सुरु हुआ है। 1940 में मनेट टी सेठना ने बम्बई में लाईक ऑफ क्राइस्ट से पहला सिनेमा अपने प्रोजेक्टर से दिखाया और 1907 में कलकता में जे एफ मदान ने पहला छविग्रह 'एलफिस्टन पिक्चर्स' पैलेस पक्का सिनेमा बनाया। आज भारत वर्ष में मल्टीप्लेक्स सिनेमा / छवीगृह है यह आधुनिक जनसंचार नव-तंत्रज्ञान का योगदान है।

जनसंचार के सबल माध्यम के रुप में फिल्मों का निर्माण बीसवी सदी के चौथे दशक में हुआ। सिनेमा का पहला चरण आलमआरा फिल्म से 1970 की हिन्दी फिल्मो से लिया जा सकता है। यह दौर हिन्दी समाज और राष्ट्र का ही नही बल्कि सभी भारतीयों का उथल-पुथल का दौर है। सिनेमा में कथ्य के जारिए विभिन्न मुद्दों को उठाया है। इस दौर की फिल्में - जैसे मुगल आजम, नयादोर, तिसरी कसम, आवारा, मदर इंडिया आदि में हिन्दी भाषा का रुप दिखाई देता है। भाषाई संतुलन की दशा में अहिन्दी भाषी लोगो नें काफी योगदान दिया है। हिन्दी भाषा - साहित्यकारों के - महत्वपुर्ण साहित्य पर भी कुछ फिल्में बनी है। उसकी भी हम चर्चा करेंगे।

सिनेमा का द्वितीय चरण 1970 से 1990 तक का माना है। हिन्दी भाषा राष्ट्रीय वाहिनी है। इसलिए हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया है। इस दौर के समय में शोले और जंजीर जैसी फिल्में आई। अतिरिक्त हिंसा के बावजुद भी यह दर्शको को बहुत पसंद आई। आज भी इस फिल्म के गीत / डायलॉग फिल्म जगत में राज करते है। शोले, जंजीर फिल्म का नाम सुनते ही लोगो को अमिताभ बच्चन, धर्मेंद्र, हेमा मालिनी, अमजदखान और फिल्म के सारे किरदारों की कहानी याद आती है। जनसंचार के नव इलेक्ट्रॉनिक मिडिया में, मोबाईल, टीव्ही, इंटरनेट पर बडी रुची से लोग पुराने हिन्दी फिल्में देखना पसंद करते है। उस समय - शोले में अमिताभ बच्चन और धर्मेंद्र, हेमा मालिनी में अच्छ खासा अभिनय का किरदार निभाया हुआ नजर आता है। शोले का - एक डायलॉग - बसंती (हेमामालिनी) इन कुत्तो के सामने मत नाच (धर्मेंद्र) आज भी याद आता है। साथ - ही - साथ इस फिल्म का और एक डायलॉग - बच्चे सोजा नही तो गब्बर आ जाएगा अमजद खान फिल्म जगत में सुविख्यात है।

Assist Professor

भारत में फिल्मों ने अब - 100 वर्षो की यात्रा पुरी की है। इस प्रकार हिन्दी भारत ही नही भारत के बाहर की भाषा है। विश्व में हिन्दी सिनेमा ही भारतीय सिनेमा का प्रतिनिधित्व करता है। हिन्दी साहित्यक कृतीयों पर आधारित फिल्में बनी है।

भारत की पहली हिन्दी फिल्म - भारतेन्दु हरिश्चंद्र के नाटक पर आधारित राजा हरिश्चंद्र सफल नही रही। सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यकार मुन्सी प्रेमचंद के साहित्य कृतीयों पर अनेक फिल्में बनाई उसमें प्रमुख रुप से उपन्यास को विषय बनाया। गरिब मजदुर (1934) में अनेक कृतियों पर नवजीवन सेवासदन यह फिल्मे सफल नही हो उसके बाद - स्वामी फिल्म बनाई। सफल नही रही। प्रेमचंद के समय में ही अमृतलाल नागर, भगवती वर्मा और शर्मा (उग्र) फिल्मों मे हाथ आजमाने लगे। 1960 में चंद्रधरशर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' इस पर बी. आर. फिल्म बनाई यह भी प्लॉप रही। रेणु जी के कहानी मारे गए गुलफाम पर तीसरी कसम फिल्म बनी उसको राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ लेकिन प्लॉप रही।

प्रेमचंद की मृत्यु के बाद उनकी तीन कहानियों पर फिल्में बनी लेकिन चर्चित हो सकी सत्यजित राय द्वारा बनाई हिन्दी फिल्म शतरंज के खिलाडी कहने का तात्पर्य यह है। कि प्रेमचंद का सारा साहित्य लोगों को पसंद है फिर भी एक भी क्यों सफल नही हो पाई। उसका कारण क्या है। निर्देशन मे यह कहानियाँ सही स्क्रिप्ट में नही उतरी है। चाहे जो भी हो हिंदी साहित्य का और सिनेमा जगत का एक - दुसरे से गहरा रिस्ता है। सिनेमा से जुडा एक तथ्य यह भी है की साहित्य का सिनेमा जगत का एक - दुसरें सें गहरा रिस्ता है। सिनेमा से जुडा एक तथ्य यह भी है। कि साहित्य लेखक में बाजार की अहम भुमिका नही होती जबकी बाजार का तत्व ना केवल लागू होता है बल्कि हावी भी होता है क्योंकि फिल्म की लागत बहुत होती।

शरदचंद्र के उपन्यास पर देवदास के नामे से 1925 और 1955 में फिल्में बने और सफल रही। बंकिम चंद्र कृतीयों पर आनंदमठ दुर्गेष नंदिनी सफल फिल्में रही। रवीद्रनाथ ठाकुर के कृती पर 'मिलन' 1946 सफल रही। सिनेमा और साहित्यकारों का आसर सातवे दशक में नजर आता है। उपेंद्रनाथ अश्क और आमृतलाल नागर के बाद कमलेश्वर महत्वपुर्ण साहित्यकार है जिन्होने सिनेमा की भाषा और जरुरत को बेहतरीन ढंग से समझा। वह सिनेमा जगत में कार्यरत टीके रहे है। मुंबई में रहने की वजह सें अनेक कलाकारों के संपर्क में वह आये। कमलेश्वर का उपन्यास 'एक सडक गलियाँ' और 'डाक बंगला' क्रमश: बदनाम बस्ती (1971) और डाक बंगला (1974) बनी लेकिन सफल नही हो सकी। कहानियों पर भी फिल्में बनी लेकिन जब गुलजार ने कमलेश्वर के कृतीयों पर 'आंधी' और 'मौसम' फिल्में बनाई तो मिल का पत्थर साबीत हुई।

निष्कर्ष

आज के 21 वी सदी में जनसंचार के माध्यम से हिन्दी भाषा का ज्यादा से ज्यादा प्रचार - प्रसार करना मुख्य वैश्वीक स्तर पर एक - दुसरे राष्ट्रो में भी जनभाषा हिन्दी का नव - इलेक्टॉनिक माध्यम, सुचना प्रोद्योगिकी के द्वारा

इन्टरनेट, ब्लॉग, सिनेमा जगत से हिन्दी भाषा को सफलताई यों के कडी से जोडकर सफलता प्राप्त कर रही है, उसका सफलता का दौर काफी तेजी से हो रहा है। आज हिन्दी भाषा का प्रयोग हर क्षेत्र में नजर आ रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सुचि

1. जन-संचार एवं पत्रकारिता कल और आज - डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत
2. हिन्दी पत्रकारिता और सुचना प्रौद्योगिकी - डॉ. तुकाराम दौड
3. संचार शोध और मिडिया - विनिता गुप्ता
4. फिल्म पत्रकारिता - विनोद तिवारी
5. पत्रकारिता के नये परिप्रेक्ष्य - डॉ. राजकिशोर
6. संचार माध्यम लेखन - डॉ. रेणा गौरी शंकर
7. मास मिडिया और समाज - मनोहर श्याम जोशी
8. फिल्म और फिल्मकार - डॉ. सी भास्करराव
9. आधुनिक पत्रकारिता चुनौतियाँ और संभावनाएँ - डॉ. अशोककुमार शर्मा
10. इलेक्टॉनिक मिडिया एवं सूचना प्रोद्योगिकी - डॉ. यु. सी. गुप्ता